International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.175-180

Hkkjr esa xjhch% ,d v/;;u
(Poverty in India: A Study)

डॉ. अनूप कुमार गुप्ता*

प्रस्तावना

xjhch ls vk'k; (Meaning of Poverty)

जन–सामान्य की शब्दावली में ^^xjhch** अथवा ^^fu/kZurk** किसी व्यक्ति की उस अवस्था का द्योतक है जब उसके पास कोई धन–सम्पदा न हो और उसकी आय अत्यन्त कम हो अर्थात् व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने असमर्थ हो। भारत में गरीबी से आशय लोगों के निम्न जीवन निर्वाह स्तर से होता है। ''विश्व विकास रिपोर्ट 1990''के अनुसार, ''निर्धनता न्यूनतम जीवन स्तर को प्राप्त करने की अक्षमता है।''

''गरीबी से आशय ऐसी स्थिति से है जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी आय जुटाने में असमर्थ होता है अर्थात् ऐसे सभी व्यक्ति गरीब समझे जाते हैं जो खर्च का भार उठाने में असमर्थ हो एवं जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित हों।''

xjhch ds çdkj (Types of Poverty)

गरीबी की कोई .सर्वमान्य परिभाषा नहीं है जो पूरे विश्व में सबको स्वीकार्य हो। गरीबी की अवधारणा को निम्न दो रूपों में ज्ञात किया जा सकता है।

- **xjhch dk fuji{k Lrj ¼Absolute Level of Poverty½**

निर्धनता की इस अवधारणा के अनुसार, निर्धन व्यक्ति वह जिसकी आय इतनी कम है कि वह न्यूनतम भरण–पोषण अर्थात् भोजन, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य आदि आधारभूत आवश्यकता को भी प्राप्त करने में असमर्थ है। विश्व बैंक के अनुसार, निरपेक्ष निर्धनता को रोटी की आवश्यकता की रेखा से नीचे की निर्धनता के रूप में वर्णित किया जाता है जिसका अर्थ है, उपभोग की जाने वाली कैलोरी तथा न्यूनतम उपभोग स्तर के द्वारा गरीबी का मापन करना। विश्वविख्यात अर्थशास्त्री tku esukMZ dhUl इसे ^^fuokZg gsrq la?k"kZ** कहते हैं। उनसे अनुसार निर्वाह हेतु संघर्ष जो मानव जाति के लिए अब तक प्राथमिक एवं ज्वलन्त समस्या रही हैं, के पक्ष में vkfFkZd ,oa lrr~iks"kh fodkl (**economic and sustainable development**) हमारी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यह उच्च्य जीवन–स्तर को प्राप्त करने का आवश्यक साधन हैं।

- **xjhch dk lkis{k Lrj ¼Relative Level of Poverty½**

यह स्तर आय की विषमता से सम्बद्ध है। यहाँ सापेक्ष गरीबी यह सपष्ट करती है कि विभिन्न आय वर्गों के बीच विषमता (असमानता) है। सापेक्ष गरीबी दो देशों के प्रति व्यक्ति आय की तुलना पर आधारित है। इस तुलना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कम प्रति व्यक्ति आय वाला देश अधिक प्रति व्यक्ति आय वाले देश की तुलना में निर्धन है। अतः निर्वाह स्तर को आयकर उपभोग व्यय के रूप में मापा जाता है।

---

* एम.कॉम., पीएच.डी., बरेली, यू.पी.।

गरीबी को निरपेक्ष गरीबी सापेक्ष गरीबी में विभाजित करना उचित नहीं हैं। गरीबी वस्तुतः निरपेक्ष है, क्योंकि आय के वितरण की असमानता निरपेक्ष गरीबी नहीं हैं।

Hkkjr e xjhch d vuqeku ¼Estimates of Poverty½

घरेलू एवं वैश्विक स्तर पर निर्धनता के स्तर एवं सघनता का मापन अत्यधिक चुनौतीपूर्ण एवं विवादास्पद मुद्दा रहा है। अर्थशास्त्रियों एवं विशेषज्ञो के स्तर पर अभी तक ऐसी कोई भी सर्वमान्य विधि अथवा फॉर्मूलाअथवा उपागम विकसित नहीं किया जा सका है, जो देशकाल एवं परिस्थितियों के स्वरूप अधिक–से–अधिक सटीक तथा वृहत् स्तर पर स्वीकार्य हो। भारत का योजना आयोग समय–समय गरीबी अथवा गरीबी अनुपात का अनुमान लगाता है, जोकि राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (**National Sample Survey Office: (NSSO)**) द्वारा किया जाता है। निर्धनता के आकलन पर सर्वाधिक आलोचनात्मक विवाद योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. मोंटेक सिंह अहलूवालिया द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में मार्च 2011 में दायर एक शपथ–पत्र को लेकर हुआ, जिसमें योजना आयोग ने कहा कि शहरी क्षेत्रों में ₹ 965 प्रतिमाह तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ₹ 781 प्रतिमाह से अधिक खर्च करने करने वाले लोग निर्धन नहीं हैं। आयोग ने यह भी कहा कि ^^'kgjh {ks=ksa esa ₹ 32 प्रतिदिन तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ₹ 26 प्रतिदिन खर्च करने वाले लोग निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के लिए चलाई गई योजनाओं के अनतर्गत लाभ पाने के पात्र नहीं हैं।यह आकलन प्रो. एस.डी. तेन्दुलकर समिति द्वारा सुझाई गई आकलन विधि पर आधारित है। यह नवीनतम सर्वेक्षण जुलाई 2009 से जून, 2010 कह अवधि के लिए पूरा हुआ, जिसकी रिर्पोट 19 मार्च, 2012 को सौंपी गई।

इस रिर्पोट के अनुसार भारत में निर्धनता अनुपात व निर्धनों की संख्या की विवरणिका निम्नवत् है–

o"kZ	fu/kZurk vuqikr ¼izfr'kr esa½			fu/kZuksa dh la[;k ¼djksM+ esa½		
	xzkeh.k {ks=	"kgjh {ks=	vf[ky Hkkjr	xzkeh.k {ks=	"kgjh {ks=	vf[ky Hkkjr
1993–94	50.1	31.8	45.3	32.86	7.45	40.37.
2004–05	41.8	25.7	37.2	32.63	8.08	40.71
2009–10	33.8	20.9	29.8	27.82	7.64	35.47
2011–12	25.7	13.7	21.9	21.65	5.28	26.93

तेन्दुलकर विधि द्वारा दिये गये नवीनतम आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2011–12 में ग्रामीण क्षेत्रों में 25.7%, शहरी क्षेत्रों में 13.7%तथा सम्पूर्ण देश में 21.9% जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रही है। वर्ष 2011–12 में भारत में 27 करोड़ लोग ऐसे है जो तेन्दुलकर निर्धनता रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहें हैं।

lEiw.kZ Hkkjr esa xjhch js[kk ls uhps jgus okys O;fDr;ksa dh la[;k ,oa izfr'krrk ¼2011&12 rsUnqydj fof/k ds vuqlkj½&

xzkeh.k ¼**Rural**½		"kgjh ¼**Urban**½		dqy ¼**Total**½	
O;fDr;ksa dk izfr'kr	O;fDr;ksa dh la[;k ¼djksM+ esa½	O;fDr;ksa dk izfr'kr	O;fDr;ksa dh la[;k ¼djksM+ esa½	O;fDr;ksa dk izfr'kr	O;fDr;ksa dh la[;k ¼djksM+ esa½
25.70	216.658	13.70	53.125	21.92	269.783

तत्कालीन सरकार और योजना आयोग ने इस तीखी आलोचनाओं से बचने के लिए प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. सी. रंगराजन की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समूह का गठन निर्धनता के मापन हेतु विधि की पुनरीक्षा करने के लिए किया। जिसने अपनी रिपोर्ट 2014 में दी। इस रिपोर्ट के अनुसार राज्यवार संशोधित निर्धनता रेखायें इस प्रकार हैं–

jaxjktu fo'ks"kK lewg ¼2014½ fof/k }kjk vkxf.kr jkT;okj fu/kZurk js[kk,a
¼izfr O;fDr vkSlr ekfld miHkksx O;;½

jkT;@dsUnz'kkflr {ks=	2009&10		2011&12	
	xzkeh.k	'kgjh	xzkeh.k	'kgjh
आन्ध्र प्रदेश	832.27	1258.09	1031.74	1370.84
अरूणाचलन प्रदेश	957.11	1294.03	1151.01	1482.94
असम	840.87	1232.2	1006.66	1420.12
बिहार	818.77	1032.82	971.28	1229.3
छत्तीसगढ़	762.55	1167.81	911.8	1229.72
दिल्ली	975.02	1410.9	1492.46	1538.09
गोवा	1025.7	1328.95	1200.6	1470.07
गुजरात	859.35	1244.8	1102.83	1507.06
हरियाणा	879.65	1275.45	1127.83	1528.31
हिमाचल प्रदेश	827.03	1178.46	1066.6	1411.59
जम्मू–कश्मीर	847.57	1200.39	1044.48	1403.25
झारखण्ड प्रदेश	744.7	1086.07	904.02	1272.06
कर्नाटक	680.81	1145.52	975.43	1373.28
केरल	803.06	1139.81	1054.03	1353.68
मध्य प्रदेश	772.29	1153.59	941.7	1340.28
महाराष्ट्र	829.29	1331.33	1078.34	1560.38
मणिपुर	923.59	1274.32	1185.19	1561.77
मेघालय	859.02	1307.2	1110.67	1524.37
मिजोरम	981.25	1385.76	1231.03	1703.93
नागालैण्ड	985	1424.22	1229.83	1615.78
ओडिशा	715.56	1030.67	876.42	1205.37
पंजाब	888.08.	1230.66	1127.48	1479.27
राजस्थान	864.49	1186.74	1035.97	1406.15
सिक्किम	882.49	1302.62	1126.25	1542.67
तमिलनाडु	785.66	1179.8	1081.94	1380.36
त्रिपुरा	777.48	1171.57	935.52	1376.55
उत्तर प्रदेश	768.65	1130.76	889.82	1329.55
उत्तराखण्ड	830.09	1169.82	1014.95	1408.12
पश्चिम बंगाल	767.2	1162.06	934.1	1372.68
पुदुचेरी	557.05	821.03	1130.1	1382.31
lEiw.kZ Hkkjr	801	1198	972	1407

Hkkjr esa xjhch ds dkj.k ¼**Causes of Poverty in India**½

भारत जैसे विकासशील देश में धन के असमान वितरण के कारण जहाँ एक ओर अमीरी का केन्द्रीयकरण हो रहा है वहीं दूसरी ओर गरीबी का दुष्चक्र लगातार बढ़ता जा रहा है। भारत में गरीबी के कुछ प्रमुख कारण निम्न प्रकार हैं–

- ### Hkwfe dk vleku forj.k ¼**Unequal Distribution of Land**½

भूमि का असमान वितरण भी गरीबी का प्रमुख कारण है क्योंकि भारत में सभी क्षेत्र एक समान गति से विकास नहीं कर रहे हैं। इस प्रमुख कारण प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधनों (पानी, बिजली, यातायात, संचार, बैंकिंग इत्यादि) का असमान वितरण हैं जिस कारण रोज़गार के अवसरों में क्षेत्रवार विभिन्नता आ जाती है। कई क्षेत्र इन संसाधनों का अधिकतम उपयोग करके विकसित हो जाते हैं जबकि अन्य क्षेत्र इन संसाधनों का आभाव में लगातार गरीबी के दुष्चक्र में फंसे रह जाते हैं।

- f'k{kk dk Lrj ¼**Level of Education**½

भारत में आज भी पारम्परिक तरीको से शिक्षा के विकास पर जोर दिया जाता है जबकि लगातार तकनीकी और व्यवहारिक कार्यकुशलताकी माँग में वृद्धि होने के कारण शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता बनी रहती है परन्तु भारत में व्यवहारिक एवं कौशिल विकास परख शिक्षा का आभाव पाया जाता है जिस कारण श्रम आधिक्य तो हो जाता है परन्तु उतनी श्रमिक कार्यकुशलता प्राप्त नहीं हो पाती जिस कारण पुनः बेरोजगारी बढ़ने के कारण निर्धनता का स्तर वैसे ही बना रहता है।

- tul[;k e of) ¼**Population Growth**½

भारत में जनसंख्या वृद्धि भी गरीबी बढ़ाने का प्रमुख कारण हैं। वर्तमान में भारत की जनसंख्या लगभग 130 करोड़ के आस–पास है जिससे श्रमिकों की संख्या लगातार बढ़ती है परन्तु रोजगार के अवसर संसाधनों के अभाव के कारण उतनी वृद्धि प्राप्त नहीं कर पाते और पुनः बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। साथ ही व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति न कर पाने के कारण गरीबो की श्रेणी में आ जाता है।

- ikdfrd lalk/kuks dk vdq'ky izcU/k ¼**Inefficient Management of Natural Resources**½

भारत जैसे विविधता वाले देश में प्राकृतिक संसाधनों का असीम भण्डार उपलब्ध है परन्तु इनके कुशल प्रबन्ध का अभाव गरीबी के बढ़ने का एक मूल कारण हैं। इनका अकुशल प्रबन्ध पर्याप्त उत्पादन के अभाव का कारण बनता है जिससे कृषि कम होती है। साथ ही नवीन तकनीको का प्रयोग न होने के कारण इस संसाधनों के दुरूपयोग को बढ़ावा देता है जिससे गरीबो की संख्या बढ़ती है।

- dherk e of) ¼**Increase in Price**½

वस्तुओं के मूल्यों में लगातार वृद्धि होने के कारण निर्धन व्यक्ति वस्तुओं को क्रय करने में सक्षम नहीं होता है और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाता। कीमतो में वृद्धि का देश की निर्धनता पर विपरीप प्रभाव पड़ता है। रिजर्व बैंक ने भी स्वीकार किया है, ^^dher fu;U=.k dh vfrfjDr xjhch mUewyu dk dkbZ vkj cf<+;k dk;ZØe ugha gks ldrk gSA**

- vkS|ksfxdj.k dk vHkko ¼**Lack of Industrialization**½

भारत के उद्योगों में नवीन तकनीकों को तुरन्त अपनाने की अक्षमता एवं उनका अकुशल प्रबन्ध उद्योगों को बन्द होने की कगार पर ले जाता है इससे बेरोज़गारी बढ़ती है एवं पुनः निर्धनता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

- cjkstxkjh ¼**Unemployment**½

भारत जैसे विकासशील एवं विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र के लिए बेरोजगारी एक जटिल समस्या है क्योंकि गरीबी का मूल कारण बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि का होना है।ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की तरफ लोगों का पलायन इस समस्या को और बढ़ा देता है क्योंकि उस अनुपात में रोजगार के अवसर सृजित नहीं हो पाते।

- xzkeh.k xjhch ¼**Rural Poverty**½

ग्रामीण गरीबी से आशय ग्रामीण क्षेत्रों की गरीबी से है। गांवों में आज भी जनता लघु एवं कुटीर उद्योगों पर निर्भर है परन्तु नये अविष्कारों एवं नवीन तकनीकों के प्रयोग के कारण ये उद्योग पिछड़ रहें हैं जिससे पुनः बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो रही है और गरीबी बढ़ रही है।

- df"k dk fiNMkiu ¼**Agricalture Backwardness**½

भारत की जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत भाग कृषि पर निर्भर है परन्तु उस अनुपात में उनका राष्ट्रीय आय में योगदान नहीं हैं। जिसका प्रमुख कारण उन्नत बीजों, सिंचाई की पर्याप्त मात्रा का अभाव एवं नवीन तकनीकों का प्रयोग न होना है। इससे उत्पादन में आशातीत वृद्धि नही हो पा रही परिणामस्वरूप गरीबी बढ़ती जा रही है।

- **vFkZ;oLFkk dh /kheh of)nj ¼Slow Growth of Economy½**

विकास की धीमी दर रोज़गार में वृद्धि से, आय की अधिकता, उद्योगों के विकास तथा उत्पादन की मात्रा में वृद्धि से बढ़ती है जो कि बेरोज़गारी को कम करने के साथ देश में व्याप्त गरीबी को भी कम करती है। विकास की धीमी वृद्धि दर विश्व स्तर पर देश को प्रतिस्पर्धापरक नहीं बना पाती जिससे गरीबी की स्थिति बनी रहती है।

xjhch nj djus ds mik; ¼Suggestions for Removing Poverty½

भारत में गरीबी (निर्धनता) को कम करने के लिए ऐसे उपाय करने होगें जिससे कौशल, उत्पादन स्तर एवं गति में वृद्धि हो सके। इस सम्बन्ध में किए जाने वाले प्रयत्नों की रूपरेखा इस प्रकार दी जा सकती है–

- नये उद्योगों की स्थापना एवं विद्यमान उद्योगों का विस्तार होने से नये रोजगार के अवसरों का सृजन होगा जिससे बेरोजगारी में कमी आयेगी तथा गरीबी का स्तर कम होगा।
- देश के विकास के लिए कुछ क्षेत्रों में विकसित तकनीकों को लागू करना एवं परम्परागत तकनीकों में सुधार उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं जिससे रोजगार में वृद्धि एवं गरीबी कम होगी।
- शिक्षा व्यवस्था में सुधार एवं व्यवसायिक व तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा श्रम की कार्यकुशलता में वृद्धि करेंगे जिससे नये रोजगार के अवसरों पर वृद्धि होगी एवं गरीबी कम होगी।
- जनसंख्या पर नियन्त्रण व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने एवं रोजगार के संसाधनों को उपलब्ध कराने में निर्णायक भूमिका निभा सकती है। इससे गरीबी के स्तर में कमी अवश्य आयेगी।
- उत्पत्ति के साधनों का समुचित उपयोग श्रम व प्राकृतिक साधनों का सर्वोत्तम उपयोग गरीबी की समस्या को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- भूमि सुधार तकनीके, उन्नत बीज़ों एवं तकनीको का प्रयोग कृषि को उन्नति की ओर ले जा सकता है। इससे कृषि आधारित छोटे उद्योगो का विकास एवं भूमिहीन व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराकर गरीबी की दर में कमी की जा सकती है।
- गरीबी उन्मूलन के विस्तृत राष्ट्रीय रोजगार कार्यक्रम, स्वरोजगार सृजन से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रम भी व्यक्तियों को रोजगारपरक बनाकर गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

Hkkjr esa ljdkj }kjk pyk;s tkus okys dqN xjhch mUewyu dk;ZØe ¼Poverty Elimination Programmes run by Government in India½

गरीबी की समस्या को कम करने के लिए भारत सरकार ने अनेक कार्यक्रम चलाये हैंजैसे–राष्ट्रीय रोज़गार कार्यक्रम, सम्पूर्ण ग्रामीण रोज़गार योजना, स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्व–रोज़गार योजना, अन्नपूर्णा योजना आदि।

jkstxkj iznku djus okys dk;ZØe

- ग्रामीण क्षेत्र के कार्यक्रम
  - स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्व–रोज़गार योजना–1999
  - सम्पूर्ण ग्रामीण रोज़गार योजना–2001
- शहरी क्षेत्र के कार्यक्रम
  - स्वर्ण जयन्ती शहरी रोज़गार योजना–1997
  - प्रधानमंत्री रोज़गार योजना–1993

jk"Vªh; lkekftd lgk;rk dk;Øe

- राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना
- राष्ट्रीय परिवार लाभ योजना
- राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना

vU; ;kstuk,¡

- श्यामा प्रसाद मुखर्जी रूर्बन मिशन
- उन्नत भारत अभियान–2014
- प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण–2016
- प्रधानमंत्री गरीबी कल्याण योजना–2016
- ''भारतनेट'' योजना–2017
- प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना–2000
- जवाहर ग्राम समृद्धि योजना–1999
- अन्नपूर्णा योजना–2000
- अन्त्योदय अन्न योजना–2000

fu"d"k

भारत में गरीबी के परिदृश्य में समस्त आंकड़ों को एवं समस्त योजनाओं का मूल्यांकन करने के पश्चात ये निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि वर्तमान व्यवस्था में गरीबी को कम करने में सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं, किन्तु इसे एक आंदोलन के रूप में लेने की आवश्यकता है, जिसमें आम जनता की जन सहभागिता आवश्यक है, योजनाओं में विशेषकर गरीब परिवारों को स्वयं आगे बढ़कर अपने अधिकार के लिए संघर्ष करना होगा व सरकार को चाहिये कि प्राथमिकता के आधार पर निस्वार्थ भाव से गरीबों का कल्याण करने में अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित करें।

lnHk xUFk& lph

- गुरूनानक ग्राम्योद्योग सेवा संस्थान, बरेली, मौलिक अभिनवीकरण प्रशिक्षण मार्गदर्शिका
- कुरूक्षेत्र पत्रिका, ग्रामीण भारत का बदलता स्वरूप
- राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, सफलता की कहानी"
- राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, "स्वयं सहायता समूह गरीबों का एक राष्ट्रीय अभिमान"
- कुरूक्षेत्र पत्रिका
- व्यावसायिक पर्यावरण

❖◆❖